International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 01(I), January- March, 2025, pp. 123-126

शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में बदलती शिक्षण पद्धति का शिक्षकों की शिक्षण दक्षता पर प्रभाव

बीना सिंह*
डॉ. हरीश कंसल**

सार

मनुष्य का सर्वांगीण विकास शिक्षा पर आधारित व केन्द्रित होता है। शिक्षा उसके विभिन्न गुणों को प्रभावित करती है। किसी भी विद्यार्थी के अन्दर इस प्रकार के गुणों का विकास करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एक शिक्षक की ही होती है। विद्यार्थी के अन्दर इन सभी गुणों का विकास करने वाला शिक्षक एक दक्ष शिक्षक कहलाता है। किसी व्यक्ति की गुणवत्ता तथा समाज में उसकी भूमिका को उसकी शिक्षा प्रभावित करती है तथा विद्यार्थी में ये गुण उसके शिक्षक की दक्षता व उसके अध्यापन के प्रति समर्पण के आधार पर आती है। यानि कह सकते हैं कि जितना दक्ष व समर्पित शिक्षक होगा उतना ही गुणवान व महत्वपूर्ण व्यक्तित्व उसके विद्यार्थी का होगा। प्रायः विद्यार्थियों को शिक्षा विद्यालयों, महाविद्यालयों से मिलती है तथा उनकी क्षमता व प्रभावशीलता वहां कार्य करने वाले शिक्षकों पर निर्भर करती है। वहाँ के शिक्षक जितने दक्ष होंगे उनके व विद्यार्थियों के मध्य सम्बन्ध उतने ही मधुर होंगे तथा जितने मधुर उनके सम्बन्ध उतना अच्छा व विकसित महाविद्यालय होगा। एक दक्ष शिक्षक वहीं होता है जो कि अपनी अध्यापन शैली से विद्यार्थी की क्षमता का विकास करता है।

शब्दकोशः *शिक्षण–प्रशिक्षण, प्रभावशीलता, गुणवत्ता, दक्षता, अध्यापन शैली।*

प्रस्तावना

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में आमुलचूल परिवर्तन देखा जा रहा है। जहाँ प्राचीनकाल में शिक्षक प्राचीन पद्धतियों का प्रयोग करते थे तथा गुरूकुल शिक्षा पद्धति प्रचलन में थे। वहीं शिक्षा की पद्धति में समय के साथ काफ परिवर्तन आया है। वर्तमान समय में आधुनिक तकनीकों के साथ में अध्यापन कार्य करवाया जा रहा है। जहाँ पहले शिक्षक व विद्यार्थी एक ही स्थान पर एकत्रित होकर अध्ययन अध्यापन करते थे। समय के साथ इसमें परिवर्तन आया है। आज शिक्षक विद्यार्थी डिजीटल माध्यम से अध्ययन करते हैं।

जैसे–जैसे शिक्षा की पद्धति में परिवर्तन हुआ है उसका असर शिक्षकों व उनकी दक्षता पर भी देखने को मिलता है। समय के साथ तकनीकों का हस्तक्षेप बढ़ता जा रहा है। इस बढ़ते हस्तक्षेप के कारण शिक्षकों पर दबाव अधिक पड़ता है। वर्तमान समय के विद्यार्थी ऑनलाइन अध्ययन को अधिक प्राथमिकता देते हैं। जिसके चलते शिक्षकों पर न केवल आधुनिक तकनीकों की जानकारी रखने का दबाव होता है बल्कि शिक्षकों को विद्यार्थियों की जिज्ञासा को दूर करने के लिए भी प्रतिबद्ध रहना पड़ता है।

शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय के शिक्षकों को विभिन्न तकनीकों व पद्धतियों के आधार पर अध्यापन करवाना होता है। उन्हें विभिन्न चार्ट व डाइग्राम के साथ अध्यापन करवाना होता है। समय के साथ शिक्षा में आये परिवर्तनों के कारण अध्यापन का तरीका व प्रणाली में परिवर्तन देखा गया है। वर्तमान समय में चार्ट, डाइग्राम के साथ–साथ पावर पाइंट व वीडियो लेक्चर की सहायता से अध्यापन किया जाने लगा है। इस

* शोधार्थी, कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान।
** सह आचार्य, कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान।

अध्यापन का सर्वाधिक प्रभाव पुराने शिक्षकों पर पड़ता है। वर्तमान समय के युवा शिक्षक आधुनिक तकनीकों के जानकार होते है। इन आधुनिक तकनीकों की जानकारी का उनकी दक्षता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वहीं पुराने शिक्षक जो कि कक्षा–कक्ष में अध्यापन देते हैं वह इन आधुनिक तकनीकों के अभाव में इन तकनीकों, पावर पाइंट, वीडियो लेक्चर आदि के साथ सामंजस्य बैठाने में असमर्थ रहते हैं। जिसका प्रभाव उनकी शिक्षण दक्षता पर देखने को मिलता है।

वर्तमान समय में बदलती शिक्षा पद्धति के कारण से महाविद्यालयों के प्रबंधकों व संचालकों का दबाव भी शिक्षकों पर अधिक हुआ है। अक्सर देखा गया है कि महाविद्यालय के प्रबंधकों व संचालकों का एकमात्र लक्ष्य अच्छा परिणाम लाना रहता है जिसके चलते शिक्षकों पर काफी दबाव बना रहता है यह दबाव उनकी शिक्षण दक्षता को भी प्रभावित करता है। इसके चलते शिक्षक न केवल शिक्षण पद्धति को ठीक से अपनाने में असमर्थ रहते हैं बल्कि उनकी दक्षता भी प्रभावित होती है। जिसका असर विद्यार्थियों के परिणामों व उनकी अध्ययन शैली पर पड़ता है।

महाविद्यालयों के संचालकों व प्रबंधकों का अच्छे परिणाम के प्रति काफी दबाव रहता है। परन्तु यह देखा गया है कि वह शिक्षा पद्धति में आये बदलावों के अनुरूप सुविधाऐं अपने महाविद्यालयों में उपलब्ध नहीं करवाते हैं। इन सुविधाओं के अभाव में तथा बढ़ते संचालकों के दबाव के चलते शिक्षक अपना शत–प्रतिशत नहीं दे पाते हैं। जिसका सम्पूर्ण प्रभाव उनके विद्यार्थियों की अध्ययन शैली पर पड़ता है।

शिक्षा की पद्धति में दिनों–दिन प्रगति होती जा रही है। पद्धति व तकनीकों में आ रहे परिवर्तन के अनुपात में शिक्षकों की शैली व क्षमता में परिवर्तन लाना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को आधुनिक पद्धति से जुड़ी कार्यशालाओं व संगोष्ठी इत्यादि में सक्रिय सहभागिता लेनी चाहिए, जिससे की उनकी क्षमता का विकास हो सके। परन्तु महाविद्यालय के दबाव के चलते तथा आर्थिक सहयोग न मिल पाने के कारणवश वह इनका हिस्सा नहीं बन पाते हैं।

नवीन शिक्षा पद्धति का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव

शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में नवीन शिक्षा पद्धति व उसका शिक्षकों की शिक्षण दक्षता पर कैसा प्रभाव पड़ा है इसका आंकलन करने हेतु भरतपुर जिले के चयनित शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 50 चयनित विद्यार्थियों से शिक्षण पद्धति व शिक्षण दक्षता पर साक्षात्कार कर वर्तमान स्थिति ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

तालिका 1: शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय नवीन संसाधन युक्त है

क्र.सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	हाँ	10	20.00
2.	नहीं	28	56.00
3.	थोड़ा बहुत	12	24.00
	योग	**50**	**100.00**

तालिका के अनुसार अधिकांश शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय नवीन संसाधनों से युक्त नहीं है, जो कि वर्तमान समय के अनुसार शिक्षकों की शिक्षण दक्षता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

तालिका 2: शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय के शिक्षक नवीन संसाधनों का उचित ढ़ंग से संचालन करते है

क्र.सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	हाँ	08	16.00
2.	नहीं	32	64.00
3.	थोड़ा बहुत	10	20.00
	योग	**50**	**100.00**

तालिका के अनुसार शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के अधिकांश शिक्षक नवीन संसाधनों का उचित ढ़ग से प्रयोग नहीं करते हैं, जो कि वर्तमान समय के अनुसार शिक्षकों की शिक्षण दक्षता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

तालिका 3: शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय के शिक्षक नवीन शिक्षण पद्धति के अनुरूप अध्यापन कार्य करते है

क्र.सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	हाँ	14	28.00
2.	नहीं	30	60.00
3.	पता नहीं	06	12.00
	योग	**50**	**100.00**

तालिका के अनुसार अधिकांश शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक नवीन शिक्षण पद्धति के अनुरूप अध्यापन कार्य नहीं करते हैं जिसका प्रमुख कारण क्षेत्र में इन पद्धतियों का उचित विकास नहीं हो पाना रहा है।

तालिका 4: शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता नवीन शिक्षण पद्धति से प्रभावित होती है

क्र.सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	हाँ	34	68.00
2.	नहीं	12	24.00
3.	पता नहीं	04	08.00
	योग	**50**	**100.00**

तालिका के अनुसार शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता नवीन शिक्षण पद्धति से प्रभावित होती है। अतः महाविद्यालयों में इन पद्धतियों को विकसित किया जाना चाहिए तथा शिक्षकों को इनका उचित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए जिससे की उनकी शिक्षण दक्षता में सकारात्मक परिवर्तन स्थापित किये जा सकें।

तालिका 5: शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता पर नवीन शिक्षण पद्धति का कैसा प्रभाव पड़ता है

क्र.सं.	मत	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	सकारात्मक	30	60.00
2.	नकारात्मक	14	28.00
3.	पता नहीं	06	12.00
	योग	**50**	**100.00**

तालिका के अनुसार शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता पर नवीन शिक्षण पद्धति का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः क्षेत्र के सभी शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में नवीन शिक्षण पद्धति के अनुरूप ही अध्ययन–अध्यापन कार्य करवाया जाना चाहिए तथा शिक्षकों को भी इसकी उचित शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।

निष्कर्ष

अन्तः में यह कहा जा सकता है कि शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय में शिक्षा पद्धति में आये बदलाव क्षेत्र के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता पर सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही प्रकार से प्रभाव डालती है। इसके उचित क्रियान्वयन से शिक्षण दक्षता में सकारात्मक परिवर्तन लाये जा सकते हैं, इस हेतु महाविद्यालय के प्रबंधकों, संचालकों व शिक्षकों को चाहिए कि इस नवीन पद्धति के अनुरूप अपनी अध्यापन शैली व पद्धति को परिवर्तित किया जाये। संचालकों व प्रबंधकों को चाहिए कि वह अपने शिक्षकों का सहयोग करें तथा नवीन पद्धतियों की

जानकारी हेतु उन्हें विभिन्न कार्यशालाओं व संगोष्ठी आदि में जाने के लिए न केवल प्रेरित करें बल्कि उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान करें जिससे की शिक्षकों की शिक्षण दक्षता को सुधारा जा सके। साथ ही संचालकों व प्रबंधकों को शिक्षकों पर दबाव कम करने की आवश्यकता है जिससे की वह खुल कर अपनी बात प्रशासन व विद्यार्थियों के मध्य रख सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अगस्टाइन, जॉस (2010). *''टिचिंग एप्टिट्यूट, कम्पेटेन्सी, एकेडमिक बेकग्राउन्ड एण्ड अचीवमेन्ट इन एज्यूकेशलन साइकोलॉजी''.* एज्यूट्रेक्स. 9(6), पृ.सं. 26–27
2. अग्रवाल, श्वेता (2012). *''कोरिलेशन स्टडी ऑफ टीचर इफेक्टिवनेस एण्ड जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ हायर सैकण्डरी स्कूल टीचर्स''.* एज्यूट्रेक्स. 12(2), पृ.सं. 38–40
3. इसाबेला, एस.ए. ऐनी. (2010). *''एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ द बी.एड स्टूडेन्ट टीचर्स इन रिलेशन टू देयर सोशियोइकनॉमिक स्टेटस''.* एज्यूट्रेक्स. 10(3), पृ.सं. 27–28
4. रॉय, आर.पी. (2010). *''इफेक्ट ऑफ पार्टिसीपेटरी–लर्निंग टेक्निक ऑफ एटीट्यूड टूवर्डस् एण्ड अचीवमेन्ट इन एज्यूकेशनल स्टेटिक्स ऑफ बी. एड स्टूडेन्टस्''.* एज्यूट्रेक्स. 10(3), पृ.सं. 32–35
5. राजकुमार (2016). *''बी.एड. कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का अध्ययन''.* एशियन जरनल ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च एण्ड टेक्नोलॉजी. 6(2), पृ.सं. 57–60
6. हामिद, ए. एण्ड ताहिरा, के.के. (2010). *''इमोशनल मेच्योरिटी एण्ड सोशियल एडजस्टमेन्ट ऑफ स्टूडेन्ट टीचर्स''.* एज्यूट्रेक्स. 10(3), पृ.सं. 29–31.

❖◆❖